International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 12-07-2020; Accepted: 17-08-2020; Published: 25-08-2020
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 5; 2020; Page No. 127-128

मुगलकालीन मुद्रा, टकसाल तथा विनिमय मूल्यः 1526-1707

नीरज प्रकाश
शोधार्थी, प्राचीन भारतीय एवं एशिआई अध्ययन (A.I. & A.S.) विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार, भारत

प्रस्तावना

मुगल साम्राज्य की स्थापना के समय भारत में सिक्कों का प्रचलन था, परन्तु कला तथा मूल्य की दृष्टि से उसमें गिरावट आ गयी थी। शाहरूख पन्द्रहवीं शताब्दी के प्रारम्भ में तैमूर वंश का प्रसि) शासक हुआ है। उसने 'शाहरूख' नाम का एक सिक्का चलाया जो मध्य–एशिया और ईरान में प्रचलित था। इसी के आधार पर बाबर ने काबुल से चाँदी का 'शाहरूख' नाम का एक सिक्का चलाया और कंधर से उसने 'बाबरी' नाम का सिक्का चलाया। 1529 में उसने आगरा के टकसान से चाँदी और ताम्बे के सिक्के चलाये। बाबर के चाँदी के सिक्कों पर सीधी तरफ कल्मा और चारों खलीफाओं का नाम था। दूसरी तरफ बाबर की उपाधि–'अल सुल्तान अल आजक वा अल खाकान अल मुकर्रम जहीरूद्दीन बाबर बादशाह गाजी' अंकित था।

हुमायूँ के सिक्के बाबर के सिक्कों के समान थे। उसके सिक्कों पर बाबर की सभी उपाधियाँ अंकित थी, केवल मुहम्मद 'बाबर बादशाह गाजी' के स्थान पर 'मुहम्मद हुमायूँ बादशाह गाजी' अंकित था। दूसरी बार 1555 में गद्दी पर बैठने के समय शेरशाह द्वारा प्रचलित मुद्रा का प्रसारण था। हुमायूँ ने बादशाह द्वारा प्रचलित मुद्रा का प्रसारण था। हुमायूँ ने बादशाह द्वारा प्रचलित मुद्रा प्रणाली को ही अपना लिया था। शेरशाह ने मिली जुली धातुओं के सिक्कों के स्थान पर केवल शु) धतु के सिक्के प्रचलित किये। उसने शु) चाँदी के करीब 180 ग्रेन का सिक्का चलाया जो 'रूपया' कहलाता था। उसने ताम्बे का सिक्का भी चलाया जो 'पैसा' कहलाता था। उसने रूपये के आधे, चौथाई, आठवें और सोलहवें भाग के भी सिक्के चलाये।

मुगल सिक्कों के विकास में अकबर का महत्वपूर्ण योगदान है। अपने शासन के प्रारंभ में उसने शेरशाह के सिक्कों के आधार पर सोने, चाँदी एवं ताम्बे के सिक्के चलाये। सिक्कों की कलात्मक रूप देने के लिए 1577 से मुजफ्फर खाँ, रोडरमल और शाह मंसूर से विचार विमर्श कर सुप्रसि) चित्रकार ख्वाजा अब्दुस को टकसाल का निदेशक नियुक्त किया और फतेहपुर सिकरी की टकसाल के उसके नियंत्रण में रख दिया। इसके अतिरिक्त टकसाल के समुचित प्रबन्ध के लिए दरबार के वित्त विशेषज्ञों को इससे संबंधित कर दिया गया। इस तरह मुजफ्फर खाँ को लाहौर की टकसाल, टोडरमल को बंगाल की टकसाल और ख्वाजामाह मंसूर को जौनपुर की टकसाल के नियंत्रण का उत्तरदायित्व दिया गया।

अकबर के काल में सोने, चाँदी तथा ताम्बे के सिक्कों का प्रचलन था। शासन के प्रारंभ में उसने 'मुहर' नाम का एक सिक्का चलाया जिसका वजन 168 से 170 ग्रेन था। टकसाल सुधार के पश्चात तरह–तरह के सिक्के चलाये गये। आइने–अकबरी में अकर द्वारा चलाये गये 26 सोने, 9 चाँदी तथा 4 ताम्बे के सिक्कों का उल्लेख है। दुर्भाग्यवश इनमें से कई सिक्के अभी तक प्राप्त नहीं हो पाये हैं। सोने के सिक्कों में सहनसाह (101 तोला, व्रमाशा और 7 सुर्ख वजन का) रहस (सहनसाह का आध), आत्मा (सहनसाह का 1/4), विसात (सहनशाह 1/5), युगल (सहनसाह का 1ध्50द्ध, लाल–ए–जलाली महत्वपूर्ण हैं।'2

अकबर ने 'रूपया' नाम से चाँदी का सिक्का चलाया जिसका वजन 11) माशा (178 ग्रेन) था। इसके अतिरिक्त जलाला (चौकोर रुपये के मूल्य का), दरब (आधा रूपया) चर्न (चौथाई रूपया), पनडाउ (रुपये का पाँचवा भाग), अष्टा (रूपये का आठवाँ भाग), दश (रूपये का दसवां भाग) काला (रूपये का सोहलवां भाग), सूकी (रूपये का बीसवाँ भाग) नामक सिक्के भी चलाये गये।

अकबर का ताँम्बे का सिक्का 'दाम' कहलाता था। दाम रुपये के चालीसवें भाग के बराबर था। ताम्बे के सिक्कों में अधेला (आधा दाम), पावला (चौथाई दाम) और दमड़ी (दाम का आठवां भाग) नाम से भी सिक्के चलाये गये।3

दाम को पचीस भागों में बाँटा जाता जिसे 'जीतल' कहते थे। इसका प्रयोग हिसाब–किताब में होता था, लेकिन सिक्कों के रूप में इसका अस्तित्व नहीं थी। अकबर कालीन सिक्के चौकोर तथा गोलाकार हैं। प्रारम्भ में उसके सिक्कों पर अकबर का नाम, इसकी उपाधियाँ, टकसाल का नाम तथा 'साम्राज्य अक्षय रहें', इस तरह की दुआ मुद्रित थी। बाद में उसके सिक्कों पर 'अल्ला हू अकबर, जल्ले जलाल, हूँ, अंकित कराया गया।

अकबर ने शासन के चालीसवें वर्ष कुछ श्रेणी के सिक्कों पर पद्यात्मक आख्यान अंकित कराया जो बाद में बन्द कर दिया गया। कुछ दिनों के बाद उन्हें पुनः चालू किया गया। अकबर ने असीरगढ़ के दुर्ग के विजय के स्मरण में एक सोने का सिक्का चलाया जिसमें एक तरफ बाज दूसरी तरफ टकसाल का नाम तथा ढालने की तिथि अंकित कराई। कुछ चाँदी के सिक्के भी चलाये गये जिनमें अकबर एक बाज के साथ घोड़े पर चढ़ा हुआ दिखाया गया है। उसके शासन के 50वें वर्ष कुछ सिक्के चलाये गये जिस पर राम और सीता की मूर्ति है तथा नागरी लिपि में 'राम–सिया' लिखा हुआ है।

सोने के सिक्के प्रारम्भ में साम्राज्य के कई भागों में ढाले जाते थे, परन्तु बाद में चार स्थानों तक सिमित कर दिया गया था। इसी प्रकार चांदी के सिक्के 14 स्थानों पर ढाले जाते थे। मुगलकालीन सिक्के पीटकर बनाये जाते थे। इससे जाली सिक्के बनाना सरल था। इसके लिए अकबर को कड़े नियम बनाने पड़े। टकसाल के प्रमुख अधिकारी दारोगा तथा सराफी थे। सरापफी का उत्तरदायित्व था कि सिक्के शुद्ध धातु के हों और उनमें मिलावट न हो।5

अबुल फजल अकबर कालीन सिक्कों की प्रशंसा करते हुए लिखता है कि–'अब सिक्के राज्य कोष के आभूषण बन गये और लोग उन्हें बहुत पसन्द करते हैं।

डॉ. विसेंट स्मिथ का कहना है–'मुगल सिक्के तुलना में समकालीन साम्राज्ञी एलिजाबेथ अथवा समकालीन यूरोपियसम्राटों के सिक्कों से कुल मिलाकर कहीं अधिक श्रेष्ठ ठहरते थे। ऐसा प्रतीत होता है कि अकबर और उसके उत्तराधिकारी इन सिक्कों

की शुद्धता अथवा वजन को कम कर उसमें मिलावट करने की लालच से निसन्देह दूर रहे। अकबर के कई सिक्कों में तो माना जाता है कि खरा सोना ही सोना है।6

जहाँगीर कालीन सिक्के भी अकबर कालीन सिक्कों के आधार पर हैं। उसने 'निसार' (एक रुपये का चौथाई) नाम का सिक्का चलाया जो उसके उत्तराधिकारियों के काल में प्रचलित रहा। इसके अतिरिक्त 'घर अफशां' तथा 'खैरकाबुल' नाम के नये सिक्के चलाये। उसने सोने और चांदी के सिक्कों का वजन 20 प्रतिशत बढ़ा दिया। उसने शासन के चौथे वर्ष उनका वजन 5 प्रतिशत पुनः बढ़ा दिया। शासन के छठे वर्ष इस प्रतिरोध पर कि ये सिक्के बहुत वजनी थे उसने पुनः अकबरकालीन तौल के सिक्के प्रचलित कराए।7 जहाँगीर ने भी अपने सिक्कों पर पद्यात्मक आख्यान अंकित कराए। राज्यारोहण के पश्चात एक सोने की मुहर चलाई गयी जिस पर अकबर रकी तस्वीर अंकित थी। कुछ सिक्कों पर जहाँगीर ने अपनी तस्वीर अंकित कराई और उन्हें कृपा पात्रों को दिया।8

शाहजहाँ के सिक्कों पर भी पद्यात्मक आख्यान अंकित हैं। औरंगजेब ने राज्यारोहण के पश्चात् सिक्कों पर कलमा अंकित करने की प्रथा को बन्द कर दिया और इसके बाद मुगल सिक्कों पर कलमा अंकित नहीं हुआ। उसके सिक्कों पर उसका नाम और उपाधि इस प्रकार अंकित हैं–'अबू अल जफर मुहीउद्दीन मुहम्मद बहादुरशाह आलमगीर औरंगजेब बादशाह गाजी।' उसके बाद सिक्कों पर मीर अब्दुल बाकी शाहबई द्वारा रचित एक पद्य अंकित कराया गया।

मुगलकालीन सिक्कों की ढलाई स्वतंत्र ढलाई के सिद्धान्त पर आधारित थी। सोने के सिक्के शुद्ध सोने के थे। चाँदी के सिक्कों पर चार प्रतिशत से अधिक की मिलावट नहीं होती थी।9 कोई भी व्यक्ति शुद्ध सोना या चाँदी ले जाकर राजसी टकसाल से सिक्के ढलवा सकता था। अधिक प्रयोग के बाद सिक्कों का वजन कम हो जाता था। सोने, चाँदी तथा अन्य धातुओं के विनिमय का भाव बाजार के द्वारा नियंत्रित होता रहता था। शासन का इसमें हस्तक्षेप नहीं था। मुगलकालीन टकसाल देश के विभिन्न भागों में फैली हुई थी। प्रमुख टकसाल आगरा, फतेहपुर सीकरी, राजमहल (बंगाल), अहमदाबाद, काबुल, इलाहाबाद, दिल्ली, पटना, लाहौर, मुल्तान और कश्मीर में थी। अठारहवीं सदी में नये राज्यों का उदय हुआ, लेकिन मुगल सम्राट के नाम पर सिक्के ढलते रहे।10 सोने का सबसे प्रचलित सिक्का मुहर था। आईन–ए–अकबरी के अनुसार एक मुहर नौ रूपये के बराबर थी। हॉकिस (1608–12) का कथन है कि एक अशरफी दस रुपये के बराबर थी। 1614 में उसका मुख्य 10.7 रूपये के बराबर था। 1626 में एक मुहर में 14 रूपये प्राप्त हो सकते थे। 1658 में औरंगाबाद में एक मुहर 16 रूपये के बराबर था। 1676 में इसका भाव गिरकर 12 और 11 रूपये के बराबर हो गया। 1695 में एक मुहर 13(रूपये के बराबर था।11 एक दाम का वजन एक तोला आठ माशा ओर एक सात सुर्ख (323) ग्रेन था। ताम्बे का मूल्य घटता–बढ़ता रहता था। और उसी आधार पर दाम और रूपये का मूल्य भी नियंत्रित होता था। अकबर के राज्य के प्रारंभ में 35 और फिर 38 दाम का रूपया परिवर्तित होता था। बाद में 40 दाम का एक रूपया होने लगा और जिस समय आईन–ए–अकबरी लिखी गयी उस समय 40 दाम का एक रूपया था। अबुल फल का कथन है कि यद्यपि एक रूपये में 40 दाम का बाजार भाव घटता–बढ़ता रहता था, परन्तु वेतन देने में एक रूपया 40 दाम के बराबर माना जाता था।12

जहाँगीर के माल में ताम्बे का मूल्य अधिक परिवर्तित नहीं हुआ। इस कारण लगभग 40 दाम एक रुपये के बराबर था। दूरवर्ती प्रदेशों में चाँदी को उपलब्धि के हिसाब से इसमें परिवर्तन होता रहता था। 1636 में गुजरात में 26 या 27 दाम का एक रुपया था। आगरे में जनवरी 1627 में 25 दाम का एक रुपया, 1640 में राजमहल (बंगाल) में 28 दाम का एक रूपया, 1661 में आलमगीरी रूपये का मूल्य औरंगाबाद में लगभग 15 दाम था। इस तरह काम का मूल्य बदलता रहता है।

संदर्भ सूची

1. गुप्ता परमेश्वरी लाल : 'क्वायंस2, पृ.–94–95, ब्राउन : क्वायंस ऑफ इंडिया, पृ.–90
2. आईन–ए–अकबरी, ब्लाखमैन भाग–1, पृ.–7–32
3. वही, 'क्वायंस' पृ.–3–32
4. गुप्ता परमेश्वरी लाल : 'क्वायंस', पृ.–118–19
5. 'आईने–ए–अकबरी, ब्लाखमैन, भाग–1, पृ.–18, होदीबाला 'स्टडीज इन इण्डो मुस्लिम हिस्ट्री, पृ.–236, 244, श्रीवास्तव, आशीर्वाद लाल : 'अकबर दी ग्रेट', भाग–2, पृ–10 207–9
6. स्मिथ–'अकबर दी ग्रेट मुगल', पृ.–157
7. गुप्ता परमेश्वरी लाल : 'क्वायंस' पृ.–119–20
8. वही, पृ.–121
9. होदीवाला, पूर्वोद्धत, पृ.–235–44
10. वही, पृ.–125
11. 'आईन–ए–अकबरी' जैरेट भाग–2, पृ.–25, फास्टर : 'अर्ली ट्रेवल्स', पृ.–101, हबीब, इरफान : एग्रेरियन सिस्टम, पृ. –384–87
12. आईन–ए–अकबरी, जैरेट, भाग–2, पृ.–31
13. वही, पृ.–27–35, हबीब इरफान, पृ.–387–92